आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय शास्त्री सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 23-02-2016 ● अंक-443 ● तारीख - 24 फरवरी 2016, फाल्गुन कृष्ण - 2 ● बुधवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रूपया ● पृष्ठ-01

अनमोल वचन - श्री सत्यसांई

आन्तरिक सम्पत्ति का संग्रह करो
न कि बाह्य वैभव का।

बात पते की

1. कर्मचारी अधिकारी की गति के अनुसार ही कार्य करते हैं।
2. केवल अलग दिखने वाला व्यक्ति ही नेता होता है।
3. समस्याओं को दबाएँ, अवसरों को उभारें।
4. महत्त्वपूर्ण कार्यों को अतिआवश्यक होने से पहले करें।
5. अगर आप किसी में कोई अच्छाई देखें तो उसे अपना लें।
6. अपनी कमजोर कड़ी को पहचानें और तुरंत सुधार करें।
7. सर्वोत्तम को बेहतर का शत्रु न बनाएँ।
8. अपने समय का धन की तरह प्रबंधन करें।
9. सोचें, निर्णय लें और वही करें जो आपको उचित लगे।
10. अपने आपको जानना ही सफलता की कुंजी है।
11. प्रत्येक कदम मील का पत्थर हो सकता है।
12. अहंकार सफलता के लिए रेत के महल के समान है।
13. आत्मविश्वास खोना सबसे बड़ी हानि है।

सुविचार

धन्यवाद!

हमेशा तुरंत कहा गया 'धन्यवाद' एक सप्ताह बाद भेजे गए दो पृष्ठ के कृतज्ञता पत्र से कहीं अधिक प्रभावी होता है।

भारत का सबसे सस्ता स्मार्टफोन –मात्र 251 रुपये

कीमत सुन हैरत में पड़ गए...यह स्मार्टफोन है, वह भी मात्र 251 रुपये में। भारतीय मोबाइल कंपनी रिंगिंग बेल ने भारत का सबसे सस्ता स्मार्टफोन लांच किया है।

दूसरे शब्दों में कंपनी अपने नाम के अनुसार आपकी घंटियां भी बजाने आयी है। इसे कई खास फीचर्स से लैस किया गया है। फोन में डाटा सेवा से लेकर कैमरा फीचर तक उपलब्ध है। इस फोन के बारे कंपनी का कहना है कि यह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मेक इन इंडिया, डिजिटल इंडिया और स्किल इंडिया कार्यक्रम के तहत तैयार किया गया है।

कंपनी की वेबसाइट पर फ्रिडम 251 को लिस्ट कर दिया गया है। स्मार्टफोन का नाम फ्रीडम 251 रखा गया है।

इस अनोखे स्मार्टफोन की खास बातें

इस स्मार्टफोन में 4 इंच की डिस्प्ले, 1.3 गीगाहर्ट्ज और कोर प्रोसेसर, 1 जी.बी. रेम 8 जी.बी. इंटरनल स्टोरेज (32 जी.बी. तक एक्सटेंडेबल), 3.2–मेगापिक्सल बैक कैमरा, 0.3–मेगापिक्सल फ्रंट कैमरा और 1450 एम.ए.एच. बैटरी है।

कंपनी का कहना है कि फ्रीडम 251 स्मार्टफोन को बनाने में सरकार से बहुत मदद मिली है और यह मेक इन इंडिया की कामयाबी का प्रमाण है।

ज्ञान देना एक निःस्वार्थ भाव सेवा

भगवान श्रीकृष्ण को उज्जयिनी के सुविख्यात विद्वान् और धर्मशास्त्रों के प्रकांड पंडित ऋषि संदीपनीजी के पास विद्याध्ययन के लिए भेजा गया। ऋषि संदीपनी श्रीकृष्ण और दरिद्र परिवार में जन्मे सुदामा को एक साथ बिठाकर विभिन्न शास्त्रों की शिक्षा देते थे। श्रीकृष्ण गुरुदेव के यज्ञ–हवन के लिए स्वयं जंगल में जाकर लकड़ियाँ काटकर लाया करते थे। वे देखते कि गुरूदेव तथा गुरु पत्नी – दोनों परम संतोषी हैं। श्रीकृष्ण रात के समय गुरुदेव के चरण दबाया करते और सवेरे उठते ही उनके चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लिया करते।

शिक्षा पूरी होने के बाद श्रीकृष्ण ब्रज

लौटने लगे, तो ऋषि के चरणों में बैठते हुए हाथ जोड़कर बोले, 'गुरुदेव, मैं दक्षिणा के रूप में आपको कुछ भेंट करना चाहता हूँ।'

ऋषि संदीपनी ने मुसकराकर सिर पर हाथ रखते हुए कहा, 'वत्स कृष्ण, ज्ञान कुछ बदले में लेने के लिए नहीं दिया जाता। सच्चा गुरु वही है, जो शिष्य को शिक्षा के साथ संस्कार देता है। मैं दक्षिणा के रूप में यही चाहता हूँ कि तुम औरों को भी संस्कारित करते रहो।' ऋषि जान गए कि मैं तो मात्र गुरु हूँ, यह बालक आगे चलकर 'जगद्गुरु कृष्ण' के रूप में ख्याति पाएगा। उन्होंने कहा, 'वत्स, मैं यही कामना करता हूँ कि तुम जब धर्मरक्षार्थ किसी का मार्गदर्शन करो, तो उसके बदले में कुछ स्वीकार न करना।' श्रीकृष्ण उनका आदेश स्वीकार कर लौट आए। आगे चलकर उन्होंने अर्जुन को न केवल ज्ञान दिया, अपितु उनके सारथी भी बने।

खुद तय करो अपना सपना प्रेरक प्रसंग

एक छोटा लड़का घोड़ों के घुमंतू ट्रेनर का बेटा था। उसके पिता इस रैंच से उस रैंच जाकर घोड़ों को प्रशिक्षण देते थे। परिणामस्वरूप उस लड़के के स्कूल अक्सर बदलते रहे। वह सीनियर क्लास में पहुंचा तो स्कूल में उससे एक निबंध लिखने को कहा गया। विषय था 'वह बड़ा होकर क्या बनना और करना चाहता है।'

उस रात उस लड़के ने सात पेज का निबंध लिखा, जिसमें बताया कि उसका लक्ष्य घोड़ों के रैंच का मालिक बनना है। इस प्रोजेक्ट में उसने अपना दिल खोलकर रख दिया। अपने सपने को पूरे विस्तार से लिखकर उसने 200 एकड़ के रैंच की एक तस्वीर भी खींची, जिसमें इमारतों, अस्तबलों और ट्रैक की ड्राइंग बनाई। फिर उसने 4,000 वर्ग फीट के मकान की विस्तृत योजना खींची, जिसे वह 200 एकड़ के रैंच पर बनाना चाहता था। अगले दिन उसने टीचर को वह निबंध थमा दिया। दो दिन बाद उसे उसका निबंध वापस मिल गया। सामने वाले पेज पर एक बड़ा लाल एफ (फेल) लिखा था। उसके नीचे लिखा था, 'क्लास के बाद मुझसे मिलो।' सपना देखने वाला लड़का क्लास के बाद टीचर से मिलने गया। उसने पूछा, 'आपने मुझे फेल क्यों किया ?' टीचर ने कहा, 'यह एक काल्पनिक सपना है। घोड़ों के रैंच का मालिक बनने के लिए बहुत पैसों की जरूरत होती है। तुम खानाबदोश परिवार के हो, तुम्हारे पास संसाधन नहीं है, पैसे नहीं हैं। तुम यह काम किसी हालत में नही कर सकते। हां, अगर तुम इस निबंध को दोबारा लिख दो और कोई यथार्थवादी लक्ष्य बना लो, तो मैं तुम्हारे ग्रेड पर विचार करने के लिए तैयार हूं।' वह लड़का घर गया और उसने इस बारे में काफी देर तक सोचा। आखिर हफ्तेभर तक विचार करने के बाद उस लड़के ने टीचर को वही निबंध ज्यों का त्यों दे दिया। बीस साल बाद शिक्षक को एक घुड़दौड़ का आमंत्रण मिला। दौड़ खत्म हुई तो एक व्यक्ति ने आकर शिक्षक के पैर छुए। घुड़दौड़ की दुनिया में एक बड़ा नाम, यह व्यक्ति वही छोटा बच्चा था, जिसने अपना सपना पूरा कर लिया था।

दुनिया में 60 फीसदी वयस्कों में नहीं होती दूध को पचाने की क्षमता

दूध को मनुष्य की रोजाना डाइट का अभिन्न हिस्सा माना जाता है, लेकिन दुनिया के 60 फीसदी वयस्कों में इसे पचाने की क्षमता नहीं होती। दूध पीते ही उन्हें पाचन में गड़बड़ी, दस्त आदि की शिकायत होने लगती है। इसका कारण यह है कि अधिकतर बच्चे जब मां का दूध पीना छोड़ते हैं, तो उनके शरीर में लैक्टेज एंजाइम बनना बंद हो जाता है। लैक्टेज ही दूध में मौजूद शर्करा को पचाने का काम करता है। वयस्क बनने के बाद उनके शरीर में दूध को पचाने की क्षमता इसलिए कमजोर होती है। दूध को आसानी से पचाने वाले बाकी 40 फीसदी लोगों में अधिकतर यूरोप, अफ्रीका और एशिया, खासकर भारत के हैं। यह स्पष्ट नहीं है कि इन इलाकों के लोगों के जीन में दूध को आसानी से पचाने की क्षमता कैसे विकसित हुई, लेकिन माना जाता है कि इसकी शुरुआत करीब दस हजार साल पहले हुई थी।

इंसानों से दस हजार गुना तक ज्यादा होती है शार्क की सूंघने की क्षमता

शिकार को पकड़ने की शार्क की क्षमता दूसरे जानवरों से ज्यादा होती है। वे रंगों की पहचान कर सकती हैं और रात में उनके देखने की क्षमता बिल्लियों से ज्यादा ताकतवर होती है। इसीलिए वे छिपे हुए जानवरों का भी पता लगा लेती हैं। उनकी स्वाद की क्षमता भी जबरदस्त होती है। किसी भी खाद्य पदार्थ को पूरा खाने से पहले वे उसे चखती हैं। इसमें त्वचा और दांत उसकी

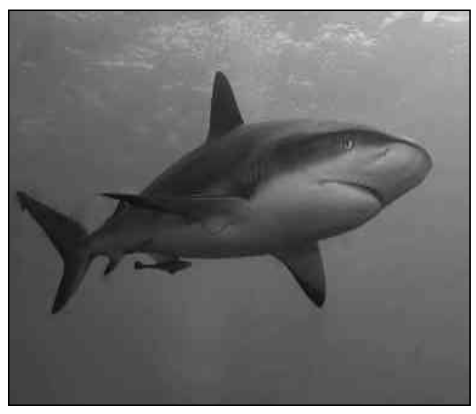

मदद करते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार अलग–अलग परिस्थितियों में शार्क की सूंघने की क्षमता इंसानों से दस हजार गुना तक ज्यादा होती है। अपने दोनों नथुनों की मदद से वे जान जाती हैं कि सुगंध किधर से आ रही है। वे चोटिल या बीमार जानवरों की खूश्बू सबसे आसानी से पहचान सकती है। शार्क के मस्तिष्क का दो–तिहाई हिस्सा खूश्बू की पहचान कर सकता है।

अति से बचें, मध्य मार्ग अपनाएं

दुख सहने की, परिश्रम करने की सबकी अपनी सीमा होती है। किंतु कुछ लोग अति कर देते हैं। अति हर बात की बुरी है परंतु ये लोग तर्क देते हैं कि हमारी सीमा ऐसी है। तो अपनी सीमा और अति में बारीक फर्क समझें। यदि क्षमता की सीमा में काम करें तो आपकी सफलता सद्भुत होगी। यदि सफलता के बाद आप आनंदित नहीं हैं तो कोई न कोई अज्ञात पीड़ा आपको सता रही है।

मानकर चलियें कि आपकी सीमा अति में बदल गई जो अपने आप में बीमारी जैसी है। बुद्ध को जब बुद्धत्व प्राप्त हुआ तो उनके संपर्क में वे लोग भी आए जो उन्हें पहले से जानते थे। कुछ लोगों ने तो उनकी परीक्षा भी ली कि क्या सचमुच उन्हें बुद्धत्व प्राप्त हो गया है। बुद्ध के आने की सूचना मिलती तो लोग तैयारी करके रखते कि इनकी परीक्षा लेंगे और बुद्ध हर बार परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाते। किसी ने बुद्ध से पूछा, 'आप हमेशा विजयी हो जाते है ?' बुद्ध ने कहा, 'मुझे न तो परीक्षा देनी है, न विजयी होना है। बुद्धत्व का मतलब ही है हर पल को जीना। जो शुभ है वह दूसरों को देना। जब मैं शुभ पर केंद्रित हूं तो अशुभ, अपमान, क्रोध, अहंकार इन सब से क्या लेना–देना। ये सब अतियों के नाम हैं।' दो अति पर सावधान रहने के लिए बुद्ध का विशेष आग्रह था–एक काम की अति और दूसरी खुद को पीड़ा पहुंचाने की अति। काम यानी भोग–विलास।

इससे बचने के लिए जब संयम पर उतरता है तो भी अति पर आ जाता है। बुद्ध ने कहा है – मध्य मार्ग अपनाइए। अपने दृष्टिकोण, संकल्प, वाणी, कर्म, आजीविका, व्यायाम, स्मृति और समाधि इन आठ बातों में मध्य मार्ग अपनाइए। मध्य मार्ग का मतलब यही है कि अति पर न टिकें। जहां तक आनंद भंग न होता हो, वहां तक हर काम करना चाहिए। यही मध्य मार्ग है और अति से बचने का तरीका।

पुत्र–वधु सेवा करे, तो अहोभाग्य

पुत्र तुम्हारी सेवा करे तो यह कोई आश्चर्य नहीं। वह तो करेगा ही क्योंकि वह आखिर तुम्हारा ही खून है। लेकिन यदि पुत्र–वधू सेवा करे तो यह आश्चर्य है। वह खून तो दूर खानदान तक की भी नहीं है, फिर भी सेवा कर रही है तो निश्चित ही यह तुम्हारे किसी जन्म का पुण्य–फल है। आज के समय में और सब तरह के पुण्य भोगना बहुत सारे लोगों की किस्मत में है, लेकिन पुत्र और पुत्र–वधू की सेवा के पुण्य को भोगना विरले ही मां–बाप के भाग्य में है।

–मुनि श्री तरूणसागर

एफिल टावर भी है अनोखा

- टावर को रोशन करने के लिए 20,000 बल्ब जलाए जाते हैं।
- 1665 सीढ़ियां चढ़कर टावर के टॉप पर पहुंचा जा सकता है।
- एफिल टावर को पेंट करने में इतने ज्यादा पेंट का इस्तेमाल होता है कि इसका वजन 10 हाथियों के बराबर हो जाता है।
- इसे 300 मजदूरों ने बनाया था। इसे बनाने में रॉट आयरन के 18038 टुकड़ों और 2.5 मिलियन कीलों का इस्तेमाल हुआ था।
- इसको डिजाइन करने वाले गुस्ताव एफिल स्टेट्यू ऑफ लिबर्टी की डिजाइनर टीम के भी मेंबर थे।

मानव मन के बोल

गया जी में पिण्डदान

गतांक से आगे.....

ना अपमान से डरना, ना मानहानि से डरना। ना सुख में, बहु सुखी होना, सुख का सदुपयोग करना। सुख का भोग नहीं करना है। अभी मुझे सभी मिला हुआ है। उसका भोग नहीं करना। मुझे सदुपयोग करना है। भोजन उतना ही करना जितना शरीर के लिये जरूरी हो। आहार और विहार का भी सदुपयोग, बल का भी सदुपयोग, धन का सदुपयोग, दान करना चाहियें। क्यों करना चाहिये?दान से कल्याण होता है।

प्रकट चार पग धर्म के, कलयुग एक प्रधान
येन–केन विधि दीने, दान करे कल्याण

यदि कड़वी बातें बोलते, तो आज से कड़वापन छोड़कर मीठी भाषा का दान करना प्रारम्भ कर दो। इसके लिये नहीं आया। कड़वापन बोलने के लिये बहुत गुस्सा करने के लिये। बहुत लोभ–लालच करने के लिये। या घी में मिलावट का महापाप, दहेज हत्या का अभिशाप, मैंने भी जीवन में जो गलती की है। बार–बार मुझे स्मरण आता है। मैं उन गलतियों से सबक लेता हूँ। आगे ऐसी गलती नहीं करूं। अभी मैं एक लाईन बोलूंगा। की हुई भूल ना दोहराने से स्वतः मिट जाती है।

एक बार जैसी गलती हो गई, ऐसी गलतियाँ दुबारा नहीं करूंगा। तीन बार मन ही मन बोलें। तो आगे से ऐसी गलती नहीं होगी–लाला, और ऐसे करते करते पवित्र हो जायेगा। ये वासनाओं ने, लालसाओं ने आज देखिये नारायण सेवा संस्थान के पास सब कुछ है। क्या नहीं है? सब कुछ है। कितना मेरे पर विश्वास किया महानुभावों ने। केवल मेरे पर ही नहीं, कमला जी पर, प्रशान्त जी पर, वन्दना जी पर, कल्पना जी पर सब पर किया। हमारे जगदीश जी आर्य पर विश्वास किया। देवेन्द्र चौबीसा पर विश्वास किया, दल्लाराम पर, भगवती लाल जी पर, दीपक मेनारिया जी पर, सब पर विश्वास किया, विश्वासम फल दायकम् श्रद्धावान लभ्यते ज्ञानम्। तो मैं निवेदन कर रहा था। काशी विश्वनाथ के दर्शन किये। और जब अभिषेक कर रहा था। बार–बार पिताजी को भी प्रणाम करता जा रहा था। जी पिताजी आपने मुझे शंकर भगवान का अभिषेक करने का सौभाग्य दिया। वहां बहुत परमानन्द की अनुभूति की। फिर हम (अपने राम जी) चले गये कोलकता। ये बाते कालखण्ड 1970–71 की निवेदन कर रहा हूँ।

क्रमश अगले अंक में ...

सम्पादकीय

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में ऐसा एक अवसर आता है, जब उसकी सफलता का अवसर होता है, तथा इस सफलता के लिए सुरक्षित शक्ति की आवश्यकता होती है। इसके बाद की जरूरत होती है कि उसकी सुरक्षित शक्ति कितने समय तक काम देती है। ऐसे अवसर भी आपके समक्ष जरूर आएंगे जब आपकी सफलता इस पर आश्रित होगी कि उस अवसर पर आप कितना संघर्ष कर सकते हैं, आप में कष्ट सहने की क्षमता कितनी है तथा आप संकट से निपटने की कितनी ताकत अपने अंदर रखते है?

मनुष्य के जीवन में अनेक प्रकार के अनुभव आते रहते हैं। छोटी अवस्था के दौरान उन्हें अपनी शक्ति की परीक्षा की आवश्यकता न थी, अतः वे अपनी शक्तियों का इस्तेमाल अनाप–शनाप करते रहे। युवावस्था में जब वे कर्मक्षेत्र में उतरे, उन पर जिम्मेदारी पड़ी, उनकी परीक्षा का असली समय आया, जब मंजिल पर एक और मंजिल डालने की आवश्यकता हुई, तो पता चला उनकी तो नींव ही कमजोर है। यदि शिक्षा, प्रशिक्षण एवं चरित्र की नींव सुदृढ़ है, तो व्यक्ति–रूपी भवन पर एक–के–बाद एक मंजिल बनाई जा सकती है और इसी प्रकार व्यक्ति का व्यक्तित्व ऊँचा उठता चला जाता है। लेकिन यदि नींव कच्ची हो तो कार्यक्षेत्र में उतरने के उपरान्त और मंजिल निर्माण नहीं की जा सकती। संकटकाल ही हमारी तैयारी की असली परीक्षा होती है। इसी दौरान आप जान पाते हैं कि आप किसी कार्य के योग्य हैं या नहीं। पावर को एकत्र करना चाहिए, ताकि उसके बल पर हम जीवन में आने वाली मुसीबतों को डटकर सामना कर सकें, और अपने जीवन के पथ पर निरन्तर आगे–ही–आगे बढ़ते रहें।

नारायण सेवा संस्थान की देश में सक्रिय शाखाएं

क.स.	नाम शाखाध्यक्ष	शाखा	सम्पर्क
1	श्री ए.एल. दुआ	मोहाली	9876610659
2	श्रीमती अल्का चौधरी	हैदराबाद	9848093779
3	श्री अमृतलाल दोशी	गोवा	9422060050
4	श्री धीरज भाई नाथवानी	पोरबन्दर	9428703404, 0286–227219
5	श्री दिनेश बंसल	आगरा	9319106182
6	श्री फतहलाल	नाथद्वारा	9829009552, 02953–230415
7	श्री गणेशलाल धींग	निम्बाहेड़ा	7597904477, 01477–222603
8	श्री गणेशमल विश्वकर्मा	सुमेरपुर	02933–252449, 252253
9	श्री हरीश मनधाने	आकोला	9422939767, 9442939767
10	श्री जगदीश नारायण बंग	नागपुर	01589–270220, 270147
11	श्री कान्तिलाल मूथा	पाली	9352911777, 02932–226271
12	श्री कुलदीप सिंह पंवार	अमृतसर	9780915047
13	श्रीमती मंजु दर्डा	परभणी	9890884697, 9422876343

क्रमशः अगले अंक में

नारायण सेवा संस्थान के अन्तर्गत किये गये नियमित नि:शुल्क दिव्यांग ऑपरेशन की सूची

क्रं.स.	रोगी का नाम	पिता/पति का नाम	उम्र	लिंग	शहर	राज्य
1.	रामचरण	श्री भगवान	8	पुरूष	जयपुर	राजस्थान
2.	सूरज	श्री ओमप्रकाश	9	पुरूष	दिल्ली	दिल्ली
3.	बिसमिता	श्री महेश्वर	10	महिला	नलबारी	आसाम
4.	हेमलता	श्री रामविलास	13	महिला	महेन्द्रगढ़	हरियाणा
5.	रिषीकेश	श्री किशौर	14	पुरूष	जलगांव	महाराष्ट्र
6.	गणेश	श्री अनिल	14	पुरूष	ठाणे	महाराष्ट्र
7.	मधुमिता	श्री तपन साहा	16	महिला	माल्दा	पं. बंगाल
8.	रेखा	श्री सीताराम	22	महिला	सोनभद्र	उत्तरप्रदेश
9.	अंकित	श्री जगराम	24	पुरूष	फिरोजाबाद	उत्तरप्रदेश
10.	प्रीति	श्री ध्रुवनाथ	26	महिला	कोलकाता	पं. बंगाल

क्रमशः अगले अंक में

श्रीरणछोड़रायजी का मंदिर

यह द्वारका का मुख्य मंदिर है। इसे द्वारकाधीश का मंदिर भी कहते हैं। गोमती की ओर से 56 सीढ़ी चढ़ने के बाद यह मंदिर मिलता है। यह मंदिर परकोटे के भीतर है, जिसमें चारों और द्वार हैं।

मंदिर सात मंजिला और शिखरयुक्त है। इसका परिक्रमा पथ दो दीवारों के मध्य से है। इस मंदिर पर पूरे थान की ध्वजा उड़ती है। इसे चढ़ाते समय महोत्सव होता है। विश्व की यह सबसे बड़ी ध्वजा है।

कथा है कि भगवान श्रीकृष्ण कालयवन के विरुद्ध युद्ध से भागकर द्वारका पहुंचे। इस प्रकार उनका नाम रणछोड़जी पड़ा। यह मंदिर 40 हजार वर्गफुट लंबा–चौड़ा और 140 फुट ऊंचा है। अंदर के अंदर के फर्श पर सफेद और नीले संगमरमर के टुकड़े कलात्मक ढंग से जुड़े हुए हैं। रणछोड़जी की मूर्ति में, द्वार के चौखट आदि में सोने और चांदी का काम है। मंदिर में मुख्यपीठ पर श्रीरणछोड़राय की श्यामवर्ण चतुर्भुज मूर्ति है। निश्चित दक्षिणा देकर मूर्ति का चरण–स्पर्श भी किया जा सकता है। मंदिर के ऊपर की चौथी मंजिल पर अम्बाजी की मूर्ति है।

द्वारका की रणछोड़राय की मूल मूर्ति तो बोडाणा भक्त डाकोर ले गए। वह अब डाकोर में है। उसके छः महीने बाद दूसरी मूर्ति लाडवा ग्राम के पास एक वापी में मिली। वही मूर्ति अब मंदिर में विराजमान है।

कर्ण अस्थियाँ (कर्णास्थियाँ)

कर्ण अस्थियाँ (कर्णास्थियाँ) – मध्य कर्ण में तीन प्रकार की छोटी–छोटी कर्णास्थियों की एक श्रृंखला होती है, जिसका संबंध एक ओर कर्ण पटल से और दूसरी ओर मध्य कर्ण की भीतरी दीवार के अण्डाकार छेद से होता हैं। इन अस्थियों का नाम इस प्रकार हैं।

(1) मुद्गरास्थि
(2) शूर्मिकास्थि
(3) रिकाबास्थि

इनका नामकरण इनकी आकृति के आधार पर किया गया है। इन अस्थियों में मुद्गरास्थि सबसे बड़ी होती है। इसका एक सिरा कर्ण पटल से लगा होता है, ऊपर वाला गोलाकार सिरा, दूसरी अस्थि के गड्ढे में अवस्थित होता है। दूसरी अस्थि का प्रवर्द्धन रिकाबास्थि से मिला होता है। रिकाबास्थि के रिकाब वाले भाग का चौड़ा भाग अन्तःकर्ण के अण्डकार छिद्र में होता है। ये आपस में लचीले बंधनों द्वारा बँधे होते हैं।

अन्तः कर्ण – कान के तीनों भागों में यह प्रमुख है। यह भाग अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण है। इसकी रचना भी अन्य भागों की अपेक्षा जटिल होती है। यह शंखास्थि के शक्वाकार भाग में होता है। इसकी आकृति घोंघे की आकृति से मिलती जुलती है। इसके अन्दर भी घोंघे की आकृति जैसी झिल्ली होती है। इन झिल्ली के अंदर एक प्रकार का द्रव होता है, जिसे अन्तर्लसीका कहते हैं। इसी प्रकार झिल्ली के बाहर भी एक प्रकार का जलीय पदार्थ (द्रव Fluid) भरा होता है, इसे परिलसिका कहते हैं। झिल्ली के एक भाग का संबंध रिकाबास्थि से होता है। यह घोंघा जैसी संरचना (झिल्ली) अन्तःकर्ण का मुख्य एवं आवश्यक भाग है, क्योंकि कापालिक श्रवण तंत्रिका की कुछ शाखाओं का अंत इसी में होता है। अन्तःकर्ण के मुख्य तीन भाग निम्न हैं – (1) कर्णकुटी (2) कोक्लिया, (3) अर्द्धचन्द्राकार नलियाँ।

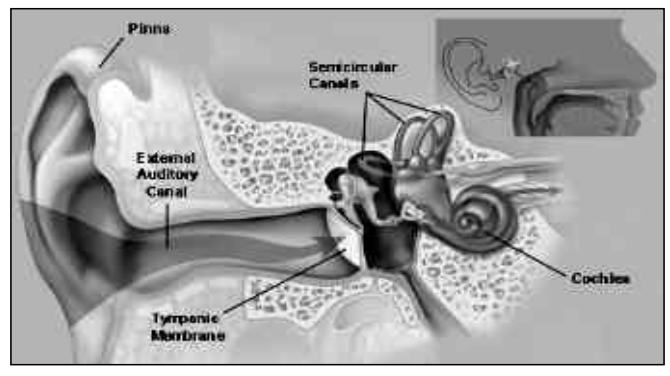

भारत का ये महल बना दुनिया का बेस्ट होटल

भारत का ये आलीशान होटल दुनिया का सबसे बेहतरीन होटल चुना गया है। 1928 में बना जोधपुर का महाराज उम्मेद भवन पैलेस को अब होटल के रूप में चलाया जाता है। पहले ये एक महाराजा का महल हुआ करता था। 26 एकड़ का यह महल चारों तरफ से हरियाली से घिरा है और इसकी अंदर की तस्वीरें देख कर आप इसमें खो जाएंगे। इस महल में कुल 347 कमरे हैं जिनमें से केवल 64 कमरों को होटल के लिए दिया गया है।

ट्रिपएडवाइजरर्स ट्रेवलर्स चॉइस अवार्ड में इस होटल को 2016 का दुनिया का सबसे अच्छा होटल घोषित किया गया। इसके लिए 840 महमानों ने पांच में से पांच अंक दिए।

मुट्ठी में तकदीर

गतांक से आगे.....

इसलिये रामचरित 'मानस' जिसमें कहा–प्रकटचारी पग धर्म के, कलयुग एक प्रधान। येन–केन विधि दीन–दान करे कल्याण, नारायण

दान करे कल्याण।

दान इस युग में भी कल्याण करता है, अगले जन्म में भी कल्याण करता है। दान हमारे शरीर को सुखायु बनाता है। दान हमें निरोगी बनाता है। दान दीर्घायु बनाता है और सबसे बड़ी बात है दान प्रसन्नता लाता है, दान कृतज्ञता लाता है, दान दयालुता, सरलता, तरलता लाता है। मैं बहुत–बहुत प्रणाम करता हूँ राज अरोड़ा साहब को, साथ ही ये भी प्रार्थना करता हूँ। जहाँ भी आप होंगे वहाँ से हम पुनः 5 बजे मिलेंगे।

लिखे लेखनी, मिले शब्द ना।
कैसे गुरू का करूँ बखान।
जो सत्य की राह दिखाये।
जो सत्यज्ञान की राह दिखाये।
ऐसे गुरू को प्रणाम करूँ।
लिखे लेखनी, शब्द मिले ना, कैसे गुरू का बखान करूँ।

गुरूर्ब्रह्मा, गुरूर्विष्णुः, गुरू देवो महेश्वरः महाराज, कहते हैं गुरू के बिना ज्ञान नहीं, गुरू सिखाता है, धर्म क्या है, गुरू सिखाता है अक्रोध धर्म है। जब–जब क्रोध आता है, समझिये कुलदागी आ गया। कुचाली आ गई, कुमंत्रणा आ गई। ये दुष्ट आ गये, ये बेईमान आ गये। ये नालायक आ गये, ये कठोर वचन वाले आ गये। ये छल वाले आ गये। ये पेट–भरू आ गये। ये पत्तल चाटू आ गये। कुलदागी के परिवार को पसन्द मत करना। आप रहियेगा नृसिंह भगवान की परम् कृपा से, भक्तराज प्रहलाद जी ने जो कथा सुनी, जो कथा मार्कण्डेय ऋषि ने मनुजी महाराज को सुनाई, वही कथा के मंगला चरण में आईये, आगे हमारे सरस्वती पुत्र और पुत्रियाँ।

गोद बिठाया प्रहलाद को, सत्य दिया दिखाया
धर्म की रक्षा के लिये नृसिंह रूप धराय –
बोलिये नृसिंह भगवान की जय!

नृसिंह भगवान को प्रणाम करते है, भक्तराज प्रहलाद को प्रणाम करते हैं और मंगलाचरण के इस भक्ति के भावों में हमें आचरण कैसा करना है।

इस की कथा है। –

जो सुख–प्यार दे समृद्धि, शुद्ध करे हरि कर।
जीवन की जो बने प्रेरणा, ऐसा मानव धर्म,
लक्ष्मी जी की कृपा रहे, प्रेम हो घर–समाज में।
दीर्घायु और स्वास्थ्य रहें,
प्रसन्न रहे हर काज नारायण,
जीवन का उत्थान हो, नृसिंहजी भगवान ने,
भक्त प्रहलाद को कथा सुनाई, धर्म की ध्वजा लहराई।
सत्यज्ञान की राह बतायें, पल में बेड़ा–पार हो।
कथा सुने जो मानव धर्म की, जीवन का उद्धार हो।
महागुणी मनुज जी ने किसी को था अपनाया
जीवन में सुख पाया, जीवन का उत्थान हो, नृसिंह जी
भगवान ने भक्त प्रदलाद को कथा सुनाई, धर्म की ध्वजा लहराई।
इन्द्रिय, निग्रह, धैर्य, विद्या और दया की बात है।
करे क्रोध पर कैसे काबु, क्षमा करे सौगात है।
जीवन की ये प्रेरणा है .....पूरे करे अभिलाशा–
दूर करे निराशा–जीवन का उत्थान हो,
नृसिंग भगवान ने
भक्त प्रहलाद को कथा सुनाई, धर्म की ध्वजा लहराई।
शास्त्रों और पुराणों का सार कथा मे आया है।
वेद से व्यवहार तक मार्ग भी बतलायां है।
कल्पवृक्ष ये पारस पत्थर –हो ....
सोना मन को बनाए–जीवन में खुशियाँ छाये।
हो..... जीवन को उद्धार हो .... नृसिंह भगवान ने .....
बोलिये ब्रह्माण्ड धर्म की –जय हो।.....

क्रमशः.....

मुख्य कार्यकारी अधिकारी–कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक–मोहन लाल गाडरी
संपादक–लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी–घनश्याम सिंह राठौड़

सादर आमंत्रण
आस्था चैनल पर सीधा प्रसारण
अपंग, अनाथ, रोगी, विधवा, वृद्ध एवं वंचितजनों की सेवा में सतत् सेवारत
नारायण सेवा संस्थान एवं सेवा परमो धर्म ट्रस्ट, उदयपुर
सहायतार्थ
श्रीमद् भागवत कथा
आयोजक
नांगवेल की पावन नगरी में चौरसिया समाज, मोहन्द्रा
: दिनांक एवं समय :
21 फरवरी 2016, दोप. 1.30 से 3.30 बजे तक
22, 23 फरवरी 2016, प्रातः 10 से 1 बजे तक
24 फरवरी 2016, प्रातः 9 से 12 बजे तक
25 से 27 फरवरी 2016, प्रातः 10 से 1 बजे तक
: स्थान : नागौरी जी महाराज मन्दिर तालाब,
ग्राम-मोहन्द्रा, तह. पवई, जिला- पन्ना (म.प्र.)
परम पूज्य कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चैयरमेन
नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर
निवेदक : चौरसिया समाज एवं समस्त ग्राम वासी, मोहन्द्रा
व्यास पीठ पर विराजमान होकर अपने मुखारविन्द से ओजस्वी रसमयी मधुरवाणी द्वारा संगीतमय कथा का श्रवणपान कराएंगी। आपश्री से अनुरोध है कि सपरिवार ईष्ट मित्रों सहित पधारकर श्रीमद् भागवत कथा का श्रवण लाभ उठावें।
स्थानीय सम्पर्क सूत्र : 9977801308, 9303766889, 89599278893
संस्थान सम्पर्क सूत्र : 0294-6622222, 9649499999
पूज्या प्राची देवी जी
:: 'नि:शवतजन' की सेवा–सहयोग के प्रति समर्पित ::
प्रशान्त अग्रवाल
अनारक्षित अध्यक्ष
नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर
कैलाश "मानव"
मैनेजिंग ट्रस्टी एवं संस्थापक
नारायण सेवा संस्थान
कमला देवी
कोषाध्यक्ष
नारायण सेवा संस्थान
प्रशान्त अग्रवाल
अध्यक्ष
नारायण सेवा संस्थान
वन्दना
निदेशक
नारायण सेवा संस्थान
जगदीश आर्य
ट्रस्टी एवं निदेशक
नारायण सेवा संस्थान
देवेन्द्र चौबीसा
ट्रस्टी एवं निदेशक
नारायण सेवा संस्थान
भक्ति एवं सेवा के महायज्ञ में एक आहुति आपकी भी...
कृपया सपरिवार अवश्य पधारें ।

मुद्रक–न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमलादेवी, मुद्रण स्थल–13, भोपा मगरी, बी.एम.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर–3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल– ई–डी–71 बप्पा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.)
सम्पादक–लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. – 0294–6622222 मो.–09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com